''मीठे बच्चे – एक बाप की याद में रहना ही अव्यभिचारी याद है, इस याद से तुम्हारे पाप कट सकते हैं''

प्रश्नः- बाप जो समझाते हैं उसे कोई सहज मान लेते, कोई मुश्किल समझते – इसका कारण क्या है?

उत्तरः- जिन बच्चों ने बहुत समय भक्ति की है, आधाकल्प से पुराने भक्त हैं, वह बाप की हर बात को सहज मान लेते हैं क्योंकि उन्हें भक्ति का फल मिलता है। जो पुराने भक्त नहीं उन्हें हर बात समझने में मुश्किल लगता। दूसरे धर्म वाले तो इस ज्ञान को समझ भी नहीं सकते।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) इस अनादि अविनाशी बने-बनाये ड्रामा में हरेक के पार्ट को देही-अभिमानी बन, साक्षी होकर देखना है। अपने स्वीट होम और स्वीट राजधानी को याद करना है, इस पुरानी दुनिया को बुद्धि से भूल जाना है।

2) माया से हारना नहीं है। याद की अग्नि से पापों का नाश कर आत्मा को पावन बनाने का पुरूषार्थ करना है।

वरदानः- हद के नाज़-नखरों से निकल रूहानी नाज़ में रहने वाले प्रीत बुद्धि भव

कई बच्चे हद के स्वभाव, संस्कार के नाज़-नखरे बहुत करते हैं। जहाँ मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार यह शब्द आता है वहाँ ऐसे नाज़ नखरे शुरू हो जाते हैं। यह मेरा शब्द ही फेरे में लाता है। लेकिन जो बाप से भिन्न है वह मेरा है ही नहीं। मेरा स्वभाव बाप के स्वभाव से भिन्न हो नहीं सकता, इसलिए हद के नाज़ नखरे से निकल रूहानी नाज़ में रहो। प्रीत बुद्धि बन मोहब्बत की प्रीत के नखरे भल करो।

स्लोगनः- बाप से, सेवा से और परिवार से मुहब्बत है तो मेहनत से छूट जायेंगे।